ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

झाँसी संग्रहालय में जैन मूर्तियाँ

एल. एम. वहल
भूतपूर्व अधीक्षक
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग
ई 812 ए, सेक्टर 11, प्रताप विहार, मेन रोड़
गाजियाबाद –201009

कुछ समय पूर्व मुझको अधीक्षक डाक्टर पाटिल ''भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण आगरा'' का आदेश हुआ कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित जिला झाँसी के चांदपुर, जहाजपुर व दुधईं आदि स्थानों में बिखरी प्राचीन मूर्तियाँ व कलाकृतियां एकत्र करके ''रानी महल'' झाँसी में रख दी जाए। आदेश के पालनार्थ हेतु लेखक को इन स्थलों की कई बार यात्रा करनी पड़ी और एक वर्ष के अल्प समय में बीहड़ जंगलों से प्राप्त करीब चौदह सौ मूर्तियां एकत्र कर ''रानी महल'' झाँसी में संग्रहीत कर दी गयी। तत्पश्चात् इन मूर्तियों की एक विस्तृत सूची भी तैयार की। अधिकाशतः इनमें शैव व वैष्णव धर्म के सम्बन्धित मूर्तियाँ है, परन्तु लगभग एक सौ तीस ऐसी मूर्तियाँ भी संकलित की गयीं, जिनका सम्बन्ध जैन धर्म से है। अतएव यह निर्विवाद है कि इनकी बड़ी संख्या में जैन मूर्तियों का मिलना इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि इन स्थलों में जैन तीर्थ अवश्य रहे होंगे।

उत्तर प्रदेश के जिला झाँसी में स्थित चांदपुर, जहाजपुर व दुधईं अपने मन्दिरों के कारण सुविख्यात रह हैं। दसवीं से बारहवीं शताब्दियों के बीच निर्मित ये मन्दिर ''नागर शैली'' के बड़े उज्जवल उदाहरण हैं और विशिष्ट वास्तु–लक्षणों एवं उत्कीर्णित मुर्ति–सम्पदा के कारण विख्यात हैं। परन्तु खेद है कि ये मन्दिर उचित संरक्षण के अभाव के कारण काल के ग्रास बन गये है आर ये स्थल अब जंगलों के रूप में परिवर्तित हो गये हैं। आज भी अतीत की गौरव–गाथा उन भग्नावशेषों में देखी जा सकती है, जो समीपवर्ती क्षेत्रों में बिखरी पड़ी है। इन्हीं क्षेत्रों में करीब एक सौ तीस मूर्तियाँ, जो जैन धर्म से सम्बन्धित हैं, प्राप्त की गयी है और वे अब ''रानी महल'' झाँसी की अमूल्य घरोहर एवं भारतीय मूर्तिकला का अद्भुत श्रृंगार हैं।

जैन मूर्तिकला एक महत्वपूर्ण विषय है, परन्तु खेद है ब्राह्मण तथा बौद्ध धर्म के अवशेषों की अपेक्षा जैन धर्म के स्मारकों व अवशेषों की ओर अधिक शोध कार्य हेतु विद्वानों का ध्यान कम गया। यह सत्य है कि जैन धर्म का भारतीय संस्कृति में एक विशिष्ट स्थान रहा है। इस धर्म के अनेक अनुयायी आज भी भारत वर्ष में वर्तमान है। तथा इस धर्म के अनेक केन्द्र भारत वर्ष के विभिन्न स्थानों पर

मौजूद है, जहाँ पर जैन धर्म एवं मूर्तिकला का अध्ययन किया जा सकता है।

हिंदू धर्म की भाँति जैन धर्म के देवी–देवताओं की संख्या अधिक है। इनमें चौबीस तीर्थकर, भवनपति, व्यंतर, नक्षत्र, यक्ष व यक्षी सभी सम्मिलित है। किंतु इनमें तीर्थकरों को ही प्रधानता दी गई है। कुछ हिंदू देवी – देवता जैसे गणपति, लक्ष्मी तथा सरस्वती आदि गौण रूप में जैन मूर्तियों के साथ अंकित हुए है। प्रायः जैन मूर्तियाँ कायोत्सग तथा पद्मासन मुद्रा में दिखाई पड़ती हैं जो विशिष्ट लक्षणों द्वारा पहचानी जा सकती है। अतएव तीर्थकरों की मूर्तियों को पहचानने में यह लक्षण विशेष सहायक होते हैं।

यह विवादाग्रस्त विशय है कि जैन मूर्तियों का निर्माण कब से प्रारम्भ हुआ। परन्तु जैन सूत्रों, जिनका निर्माण काल ई0पू0 200 के आस–पास है से ज्ञात होता है, कि महावीर से पहले भी कई जिन मूर्ति रूप में पूजे जाते थे। हो सकता है कि इस काल के आस–पास से जैन तीर्थकरों की प्रतिमायें बनना शुरू हो गयी होगी। परन्तु अभी तक प्रमाणिक अवशेष उपलब्ध नहीं हो सके। पर प्रतिमा संरचना की परम्परा अवश्य प्राचीन रही होगी, जो कुषाण गुप्त एवं मध्यकालीन युग तक निरन्तर चलती रही है। जैन सूत्रों से ज्ञात होता है, कि ईसवी सन् की प्रथम शताब्दी में श्वेताम्बर तथा दिगम्बर मत उद्भूत हुए है। इस मतभेद के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की व्याख्यायें प्रचलित हैं, किन्तु वह विभाजन विद्वानों के मतानुसार महावीर के निर्माण के बहुत बाद हुआ। श्वताम्बरों की मान्यतानुसार वस्त्र पहनने की परम्परा है, परन्तु दिगम्बर शाखा नग्न रहने का आदेश देता है। इस विभाजन का जैन मूर्ति कला पर स्पश्ट प्रभाव दृष्टव्य हैं।

इतिहास एवं पुरातत्व दृष्टिकोण से उपलब्ध जैन मूर्तियों की संख्या बहुत अधिक नहीं है, अपितु इस विषय पर अधिक शोध–कार्य होना भी बाकी है। अभिलिखित प्रमाणानुसार ज्ञात होता है कि ई0पू0 चौथी शताब्दी में मगध तथा कलिंग में जैन मूर्तियाँ पूजी जाती थी। (खारवेल का लेख) किन्तु इस युग की मूर्तियाँ अप्राप्य है। मथुरा की जैन मूर्तियों, जो कंकाली टीले से प्राप्त हुई हैं, अधिकांश कुषाण युगीन है। प्रायः इन मूर्तियों पर संक्षेप में लेख भी अंकित हैं। गुप्त एवं मध्य युग में जैन मूर्तियाँ अधिक संख्या में उपलब्ध हुई हैं।

झांसी संग्रहालय में संग्रहीत जैन मूर्तियों में अधिकांश तीर्थकरों की ही प्रधानता है। प्रायः जैन मूर्तियाँ कायोत्सर्ग मुद्रा में दिखती हैं

किन्तु पदमासन मूर्तियों का अभी अभाव नहीं है। चौबीस तीर्थकरों में से केवल ग्यारह तीर्थकरों की मूर्तियाँ उपलब्ध है। जो इस प्रकार है आदिनाथ, अजीतनाथ, संभवनाथ, अभिनन्दननाथ, सुमतिनाथ, शांतिनाथ, कुन्थानाथ, अरहनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ व मुनि सव्रत। तीर्थकरों की मूर्तियों के अलावा जैन देवी चक्रेश्वरी की एक मूर्ति यहां उपलब्ध है। अन्य तीर्थकरों की अपेक्षा पार्श्वनाथ की मूर्तिया बहुत बड़ी संख्या में उपलब्ध है एवं खंडित है। जिनों के मुख्य भाग अधिकांशतः नष्ट कर दिये गये है और कुछ प्रकृति की विनाशकारी तत्वों से नष्ट हो गये हैं। इन मूर्तियों का निर्माण संरचना की शैली के अनुसार दसवीं से बारहवीं शताब्दी के अन्तर्गत हुआ जान पड़ता है। यह चन्देल युग की अनुपम कलाकृतियाँ है तथा कला की दृष्टि से अद्वितीय हैं। इन मूर्तियों के गढ़ने में मध्ययुगीन शिल्पियों ने परम्पराओं का पालन किया है और अपनी कल्पना शक्ति द्वारा उसमें प्राण भर दिये है। इनमें कला निखर उठी है। संरचना में शिल्पी अत्यधिक सफल हुआ है।

तीर्थकर ''ऋषभनाथ'' की अनेक मूर्तियां इस संग्रहालय में दृष्टव्य है। मूर्तियां प्रायः खंण्डित है, लेकिन जो कुछ भी विनाश होने से बच गयी ह वह कला की अनूठी देन है। ''ऋषभनाथ'' की मूर्तियाँ कायोत्सर्ग एवं पदमासन मुद्रा में उपलब्ध है। पदमासन मूर्ति में तीर्थकर पालथी मार कर ध्यान मुद्रा में सिंहासन पर बैठे है। दांयी तथा बांयी ओर चंवरधारी एक–एक यक्ष खड़ा है। सिर के पीछे सुन्दर अलंकरण युक्त प्रभा मण्डल है। सिर के ऊपर त्रिछत्र है व उसके ऊपर ढोलक और उसके दोनों ओर दो गंधर्व उकेरे गये ह। पैरों के नीचे जो पर्दा है, उसके निकट ही तीर्थकर का चिन्ह 'वृशभ' अंकित है। नीचे पीठिका के एक कोने पर 'गोमेध यक्ष' तथा दूसरी ओर यक्षी 'चक्रेश्वरी' स्थापित है। कला की दृष्टि से यह संरचना अद्वितीय है। तीर्थकर के शारीरिक अवयव अति लावण्यमय है। एक अन्य मूर्ति जो 'ऋषभनाथ' की है, वह भी कायोत्सर्ग मुद्रा में द" ाियो गयी है। तीर्थकर सिंहासन पर खड़े हैं तथा पैरों के नीचे लटकते पर्दे पर उनका लक्षण 'वृषभ' अंकित है। पीठिका के एक कोने पर यक्ष गोमध तथा दूसरे कोने पर यक्षी 'चक्रेश्वरी' अंकित है। चंवरधारी यक्ष छत्र प्रभा मंडल इत्यादि अपने–अपने स्थानों पर परम्परागत स्थापित है। तीर्थकर की आकर्षक मुद्रा शरीर का मनोहारी गठन, उन्मीलित नेत्रों से युक्त तथा अलौकिक शांति एवं आनन्द मिश्रित भाव से

दीप्त मुख–मण्डल दर्शक को मोहने में सफल है।

तीर्थकर अजीतनाथ की बहुत कम मूर्ति इस संग्रहालय में उपलब्ध है। अधिकांश मूर्तियाँ खंडित है। दुधई से प्राप्त बलई पत्थर से निर्मित यह मूर्ति उल्लेखनीय है। यहां तीर्थकर कायोत्सर्ग मुद्रा में सिंहासन पर खड़े दिखते है। कमलासन के नीचे विपरीत दिशाओं की ओर देखते हुए दो सिंह। इनके बीच में लटकते पर्दे में तीर्थकर का लक्षण गजांक्ति है। मूर्ति के दायी व बायीं ओर दो चंवरधारी यक्ष खड़े है। सिर के पीछे अलंकरण युक्त प्रभा मण्डल है। ऊपर की ओर छत्र व ढोलक है। उसके दोनों ओर दो गंधर्व अंकित किये गये है। मुख्य मूर्ति के दोनों ओर छोटी–2 जिनाकृतियां अंकित हैं। पारपीठ के समीप यक्षों के साथ एक 2 उपासक भी है। तीर्थकरों के अवयव एवं शरीर का गठन अत्यन्त मनोहारी है। मूर्ति का सिर खंडित हो गया है।

तीर्थकर ''संभवनाथ'' की अनेक मूर्तियाँ इस संग्रहालय में प्रदर्शित हैं, परन्तु अधिकांश खंडित अवस्था में है। केवल एक ही मूर्ति उल्लेखनीय है, जो पदमासन मुद्रा में हैं। तीर्थकर ध्यान मुद्रा में पालथी मार कर बैठे दिखाई पड़ते हैं। वक्ष पर श्रीवत्स चिन्ह अंकित हैं। कमलासन के नीचे दो सिंह विपरीत दिशाओं की ओर देखते हुए दृष्टव्य है। इनके बीच लटकते पर्दे पर तीर्थकर का लक्षण 'अश्व' अंकित है। मूर्ति का सिर खंडित हो गया है।

तीर्थकर 'अभिनन्दननाथ' की बहुत की कम मूर्तियाँ इस संग्रहालय में दृष्टिगोचर होती है। केवल एक ही मूर्ति उल्लेखनीय है। तीर्थकर सिंहासन के ऊपर कायोत्सर्ग मुद्रा में हैं और नीचे की ओर विपरीत दिशाओं की ओर देखते हुए दो सिंहाकित हैं। पीठिका के मध्य लटकते पर्दे में तीर्थकर का चिन्ह वानर उकेरा गया है। यक्ष व यक्षी, अंजली मुद्रा में बैठे उपासकरण का भी चित्रण पाद पीठ पर किया गया है। मूर्ति के दायीं व बायीं ओर चंवरधारी अंकित हैं तथा इनके ऊपर बैठे हुए जिनों की छोटी–2 आकृतियाँ उकेरी गयी है। कला की दृष्टि में यह संरचना सुन्दर है। तीर्थकर का शारीरिक अवयवों का गठन लावण्यमय हैं।

तीर्थकर ''सुमतिनाथ'' की मूर्ति इस संग्रहालय में बहुत ही कम उपलब्ध है। उल्लेखनीय मूर्ति केवल एक है। प्रस्तुत उदाहरण में तीर्थकर सिंहासन के ऊपर कायोत्सर्ग मुद्रा में है। नीचे पीठिका पर विपरीत दिशाओं की ओर देखते हुए दो सिंह है 'पैरों के दोनों ओर एक यक्ष

खड़ा है तथा उनके साथ अंजली मुद्रा में उपासक भी है। तीर्थकरों के दोनों ओर चंवरधारी दर्शनीय हैं तथा उनके ऊपर जिन की छोटी–2 आकृतियाँ हाथी के साथ उकेरी गयी है। तीर्थकर का सिर खंडित तथा दोनों हाथ नष्ट हो गये है। वक्ष पर श्री वत्सचिन्ह अंकित हैं।

प्रस्तुत संग्रहालय में इस समय तीर्थकर 'शांतिनाथ' की अनेक मूर्तियाँ संग्रहीत है। ये दुधई व चाँदपुर से आयी है। यहां पर शांतिनाथ पदमासन एवं कायोत्सर्ग मुद्रा में दिखाई पड़ते है। प्रायः जिनके चेहरे जानबूझ कर खंडित किये गये हैं तथा कुछ प्राकृतिक कारणों से नष्ट हो गये ह। प्रस्तुत उदाहरण नमिनाथ तीर्थकर शांतिनाथ कमल के सिंहासन पर कायात्सर्ग मुद्रा में है। आसन के नीचे विपरीत दिशाओं की ओर देखते हुए दो सिंह विराजमान है। बीच में लटकते पर्दे पर तीर्थकर का लक्षण अंकित है। तथा पैरों के दोनों ओर एक यक्ष खड़ा है। साथ में अंजली मुद्रा में उपासकगण हैं। तीर्थकर के दायीं बायीं तरफ चंवरधारी दरसाये गये है और उनके ऊपर जिन की छोटी–2 आकृतियाँ चित्रित है। सिर के पीछे अलंकरण युक्त प्रभा मण्डल है और ऊपर विछत्रावली के साथ दो गंधर्व उकेरे गये है। तीर्थकर के वक्ष पर श्री वत्स चिन्ह अकित हैं। कला की दृष्टि से यह सुन्दर मूर्ति है तथा शारीरिक अवयव अति मनमोहक व लावण्यमय है।

तीर्थकर 'कुन्थनाथ' की मूर्तियाँ भी झांसी संग्रहालय में बहुत ही कम उपलब्ध है। शायद एक से ज्यादा न हो। प्रस्तुत मूर्ति चांदपुर से लायी गयी है जो बहुत ही दीर्घकाय है। इस मूर्ति की ऊंचाई करीब आठ फिट है और देखने में बहुत भव्य व विशाल लगती है। खेद है कि यह मूर्ति दो भागों में टूटी हुई है। प्रस्तुत उदाहरण में कुन्थनाथ कायोत्सर्ग मुद्रा में सिंहासन पर खड़े हैं। पैरों के दोनों ओर चंवरग्राही अंकित है। लटकते हुए पर्दे पर तीर्थकर का चिन्ह 'अज' अंकित है। सिंहासन के नीचे विपरीत दिशाओं की ओर देखते हुए दो सिंह विराजमान है। निकट ही उपासक गण एवं यक्षों का चित्रण बहुत ही सजीव ढंग से किया गया है। शिल्पी ने इतनी बड़ी प्रतिमा अत्यन्त कुशलता से गढ़ी है। तीर्थकर के शारीरिक अवयव का प्रदर्शन बहुत ही आकर्षक ढंग से किया गया है।

तीर्थकर 'अरहनाथ' की मूर्ति इस संग्रहालय में बहुतायत से नहीं है। प्रस्तुत एक मूर्ति में तीर्थकर कायोत्सर्ग मुद्रा में सिंहासन पर खड़े

है। आसन के नीचे विपरीत दिशाओं की ओर देखते हुए दो सिंह विराजमान है। परों के दोनों ओर यक्ष व यक्षी तथा दो उपासक चित्रित दिखाई पड़ते हैं। पाद पीठ पर तीर्थकर का चिन्ह 'मीन' अंकित है। मूर्ति के दोनों ओर चंवरग्राही का चित्रण बहुत सुन्दर है। तीर्थकर के वक्ष पर श्रीवत्स चिन्ह अंकित है। मूर्ति खंडितावस्था में है।

तीर्थकर 'मुनि सवर्त्र की कई मूर्तियाँ संग्रहालय में उपलब्ध है लेकिन अधिकांश मूर्तियाँ खंडित ह। दुघई से इन तीर्थकर की अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। एक श्रेष्ठ उदाहरण में 'मुनि सुवर्त्र' कायोत्सर्ग मुद्रा में सिंहासन पर खड़े है। दायीं तथा बायीं ओर चंवर लिए एक यक्ष खड़ा है। मूर्ति के दोनों ओर छोटे–छोटे छः जिन अंकित ह। सिर के पीछे प्रभा मंडल, ऊपर त्रिछत्रावली तथा उड़ते हुए गंधर्व का अकन बहुत सुन्दर ढंग से किया गया है। पैरों के नीचे झूलते पर्दे पर तीर्थकर का चिन्ह कूमीकित है। नीचे पाद पीठ पर यक्ष व यक्षी तथा दो सिंह विपरीत दिशाओं की ओर देखते हुए दरसाये गये है। कला की दृष्टि से यह मूर्ति बहुत उत्तम है। शारीरिक गठन का प्रदर्शन अति लांवण्यमय है तथा मुरत मंडल अलौकिक शांति से दीप्त है।

संग्रहालय में 'नेमिनाथ' की भी अनेक मूर्तिया प्रदर्शित है। अधिकांशतः इनमें से खंडित है और दुधई व चांदपुर से आयी है। प्रस्तुत एक उदाहरण में नेमिनाथ कायोत्सर्ग मुद्रा में सिंहासन पर दिखाई गये हैं। पैरों के दोनों ओर एक यक्ष खड़ा है तथा नीचे लटकते पर्दे पर शंख चित्रित है। वक्ष पर श्रीवत्स चिन्ह अंकित है।

संग्रहालय में इस समय पार्श्वनाथ की चालीस पचास मूर्तियां उपलब्ध है। अधिकतर यह मूर्तियां चांदपुर, दुधई से लायी गयी है। तीर्थकर कायोत्सवर्ग एवं पदमासन मुद्रा में उपलब्ध है। अधिकांश मूर्तियां खंडित है। परन्तु कुछ मूर्तियां बहुत अच्छी अवस्था में हैं। प्रायः यह मूर्तियाँ बलुई पत्थर में उकेरी गयी है। इनके पैरों के पीछे नाग घुमाव में उठ कर सिर के ऊपर फणों का चंदवा प्रस्तुत करते हैं। कुछ मूर्तियों में दो रक्षक मात्र है। किंतु कुछ में यक्ष–यक्षी, उपासक, चंवरग्राही छोटे–छोटे जिनाकृतियाँ एवं गंधर्व इत्यादि अंकित है। कला की दृश्टि में कुछ मूर्तियाँ वास्तव में अद्वितीय है। अवयव की संरचना अति लावाण्यमयी है। तीर्थकर की आकर्षक मुद्रा, शरीर का मनोहरी गठन उन्मीलित नेत्रों से युक्त तथा अलौकिक शांति एवं आनन्द

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

मिश्रित भाव से दीप्त मुख मण्डल अति प्रभावकारी हैं वक्ष पर केवल श्रीवत्स चिन्ह दिखाई पड़ता है।

संग्रहालय में 'महावीर' की कोई भी मूर्ति उपलब्ध नहीं है, केवल लेखक ने एक उदाहरण दुधई में देखा है यह बहुत ही खंडितावस्था में उपलब्ध है। प्रस्तुत उदाहरण में तीर्थकर महावीर पालथी मारकर सिहासन पर ध्यान मुद्रा में बैठे हैं और वक्ष पर श्रीवत्स चिन्ह अंकित है। दायीं तथा बायीं ओर चांवर लिये एक–एक यक्ष खड़ा है। पैरों के नीचे तीर्थकर का चिन्ह 'सिंह' अंकित है तथा दो सिंह विपरीत दिशाओं की ओर देखते हुए विराजमान है। सिर के पीछे अण्डाकृति प्रभा मण्डल है और इसके दोनों ओर माला लिए तीन गंधर्व है। यह मूर्ति वास्तव में दर्शनीय है।

जैन देवियों की बहुत थोड़ी सी मूर्तियाँ झांसी संग्रहालय में हैं। सबसे महत्व की एक सुन्दर गठित चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति है। देवी उड़ते हुए गरूण के स्कन्धों पर आरूढ़ है। आरूढ़ का आकार देवी के आकार के बराबर है। ऊपर की ओर चार बैठे हुए जिन उकेरे गये है। यह मूर्ति बहुत ही दर्शनीय है।

बुन्देलखण्ड के सम्भाग में यह संग्रहालय अति महत्वपूर्ण स्थान रखता है। तथा मूर्ति कला के अध्ययन हेतु आकर्षक केन्द्र है। अभी इसका और विकास होना शेष है।

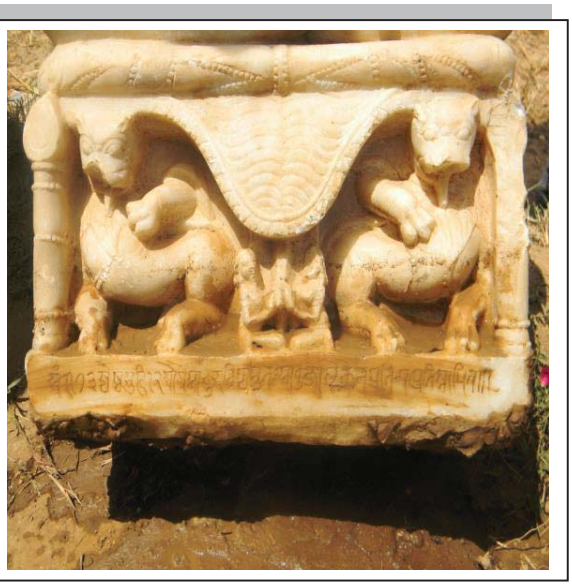

ग्राम–ई" वरीपुर, जिला–इटावा से प्राप्त जैन धर्म की मूर्तियां